International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 08 Aug- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिका शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

बृजेश कुमार शर्मा ,शोधार्थी
डॉ. लोकेन्द्र सिंह, सह आचार्य
कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग
निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर

शोध सारांश

संवेगात्मक बुद्धि किसी व्यक्ति के व्यवहार को बेहतर परिणामों की ओर निर्देशित करने में मदद करने के लिए उपयोगी है। विद्यालय स्तर के शैक्षिक कार्य को पूरा करना शैक्षणिक उपलब्धि का प्रतिनिधित्व करता है। विद्यार्थी या बालक की मूलभूत क्षमता, बुद्धि स्तर, रूचि, अभिप्रेरणा का स्तर शैक्षिक उपलब्धि को बड़े स्तर पर प्रभावित करते है। प्रत्येक बालक की कुछ मूलभूत क्षमताएं होती है जिनको आधार बनाकर बालक को सिखाना चाहिए।संवेगात्मक विकास शैक्षणिक अभिवृद्धि एवं विकास का एक बहुत ही महत्वपूर्ण एवं आवश्यक पहलू है। मनुष्य के लगभग सभी व्यवहार कही न कही प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संवेगों से निश्चित रूप से जुड़े होते हैं। हम कह सकते है कि मनुष्य के प्रत्येक क्रियाकलापों में संवेगों की उपस्थिति रहती ही है।

संकेताक्षर : संवेगात्मक बुद्धि,संवेग शैक्षिक कार्य , बुद्धि, रूचि, अभिप्रेरणा, शैक्षणिक उपलब्धि, मूलभूत क्षमताएं।

विशिष्ट शब्द (Key words)

विद्यार्थी ,संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि ,संवेग।

प्रस्तावना :–

संवेगात्मक विकास शैक्षणिक अभिवृद्धि एवं विकास का एक बहुत ही महत्वपूर्ण एवं आवश्यक पहलू है मनुष्य के लगभग सभी व्यवहार कही न कही प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संवेगों से निश्चित रूप से जुड़े होते हैं। हम कह सकते हैं कि मनुष्य के प्रत्येक क्रियाकलापों में संवेगों की उपस्थिति रहती ही है। यह संवेग ही है जो मनुष्य के विचारों एवं व्यवहारों को मुख्य रूप से आगे ले जाने की भूमिका अदा करते हैं। संवेग ही मनुष्य की शारीरिक मानसिक, उसके सीखने की प्रक्रिया, चरित्र और समायोजन के क्षेत्र को प्रभावित करते हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 08 Aug- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संवेग शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द "ईमोवेयर"(Emovere) से हुई है – जिसका अर्थ होता है भड़काना या उत्तेजित करना। प्रत्येक अध्यापक को चाहिए कि निष्पक्ष व वस्तुनिष्ठ रूप में बालकों के संवेगों व भावनाओं को जानने व समझने का प्रयास करे।

वुडवर्थ के अनुसार :– 'संवेग, व्यक्ति की उत्तेजित दशा है।''

कुछ संवेग निम्न है :–

डर :–इस संवेग की स्थिति वातावरणीय है। बालक विद्यालयी परिस्थितियों जैसे परीक्षाऐं, परिणाम स्वीकार्यता, अध्यापक, गृहकार्य से भयभीत होते हैं। अतः अध्यापक को छात्रों में व्याप्त भय को दूर कर उनमें अधिगम को प्रभावित होने से बचाना चाहिए।

क्रोध :– प्रारंभिक बाल्यावस्था में अधिक सामान्य संवेग होता है, बालक अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति न होने पर स्वनियंत्रण खो देता है। कभी कभी दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए बालक क्रोध की अभिव्यक्ति का सहारा लेता है अतः अध्यापक छात्रों को ऐसी स्थितियों से बचायें।

ईर्ष्या :–यह एक मिश्रित संवेग है , जिसमें क्रोध एवं भय निहित होता है, वास्तव में ईर्ष्या , स्नेह के अभाव में बालक द्वारा अभिव्यक्त की गई प्रतिक्रिया है। इसके लिए अध्यापक को चाहिए कि वह किसी भी बालक को अनचाहा प्यार न दे। बालक की अनचाही प्रशंसा अध्यापक द्वारा नहीं की जानी चाहिए।

जिज्ञासा :– जानने की इच्छा है, प्रत्येक नवीन वस्तु बालक की जिज्ञासा को उभारती है। अतः उत्तरबाल्यावस्था में बालकों को संतोषप्रद उत्तर देकर उसकी जिज्ञासा को समय रहते शांत करना चाहिए।

प्रेमः– प्रेम शैशवावस्था से ही परिचित हो जाता है प्रेम का दायरा आयु के साथ साथ विस्तृत होता है। बालक अपने माता–पिता से व किशोरावस्था में बालक हम उम्र के साथियों व विपरित लिंग के लोगों के साथ प्रेम करता है। अध्यापक को बालक को प्रेम के बारें में बताकर इस संवेग की महता बालक के दिमाग में स्थापित करनी चाहिए।

हर्ष :– खुशी व प्रसन्नता का नाम है।इसमें बालक संतोष प्राप्त करता है। अध्यापक को चाहिए कि वह हर्ष को प्रेम से जोड़कर बालकों में नई खुशी की सुगंध का विकास करे।

जन्म क्रम, थकावट, माता पिता का दृष्टिकोण कमजोर स्वास्थ्य, सामाजिक वातावरण एवं बालक की बुद्धि आदि के कारण जो संवेग को प्रभावित करने वाले कारणों में से एक है। अतः अध्यापक को चाहिए कि वह निष्पक्ष व वस्तुनिष्ठ रूप से उक्त कारणों का गहन अध्ययन कर बालकों के विकास पर ध्यान देकर ईमानदारी से उनका मार्गान्तीकरण करे।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 08 Aug- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

शोध का औचित्य :–

संवेगात्मक बुद्धि लब्धि पर भारतीय परिवेश में बहुत कम कार्य हुआ है तथा विदेशों में EQ से सम्बन्धित बहुत काम किया जा रहा है। अतः EQ की महता को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने संवेगात्मक बुद्धि के सम्बन्ध में शोध कार्य को चुना तथा संवेगात्मक बुद्धि का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के लिए चुना।

इस समस्या का औचित्य छात्र–छात्राओं के लिए ही नहीं बल्कि प्रत्येक व्यक्ति, समाज, भावी शिक्षक आदि सभी के लिए उपयोगी होगा। इस समस्या से संबंधित शोध कार्य नहीं होने के कारण यह समस्या शोधार्थी ने चुनी है।

शोधार्थी ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शौक्षिक उपलब्धि के अध्ययन को महत्वपूर्ण स्थान दिया है क्योंकि वर्तमान में इन दोनों तथ्यों का अध्ययन आवश्यक है। यह शोध विद्यार्थियों के शिक्षा से जुड़े अन्य तथ्यों के/पहलुओं के लिए महत्वपूर्ण रहेगा। इस आधार पर ही शोधार्थी ने इस शोध विषय का चयन किया है।

समस्या कथन :–

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

शोध उददेश्य :–

1. उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन ।

2. उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :–

1. उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

2. उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

उपकरण :–परिकल्पनाओं की जाँच के लिये इस शोध पत्र में निम्न परिक्षण का प्रयोग किया गया है।

सवेंगात्मक बुद्धि लब्धि मापनी :–

A.K. Singh and Shruti Narain – Emotional Intelligence Scale

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 08 Aug- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रस्तुत शोध पत्र में डॉ अरुण कुमार सिंह एवं श्रुति नारायनी द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि लब्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

शैक्षिक उपलब्धि का मापन

शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों के गत परीक्षा परिणामों को लिया गया है। जिसमें कक्षा 11 की शैक्षिक उपलब्धि के लिए कक्षा 10 के परीक्षा के प्राप्तांक लिये गये है।

न्यादर्श :– इस पत्र हेतु यादृच्छिक न्यादर्श का प्रयोग करते हुये जयपुर जिले की 800 उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में रखी गई है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

1.उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी संख्या

क्र. सं.	विद्यार्थियों की संख्या	वर्ग समूह	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	t
1.	400	शहरी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी	21.13	2.99	10.68
2.	400	गामीण विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी	19.13	2.28	

स्वतंत्रता के अंश 798 हेतु आवश्यक 'टी' का तालिका मान

0.05–1.96 0.01–2.56

तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 21.13 व मानक विचलन 2.99 है एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 19.13 व मानक विचलन 2.28 है। इस आधार पर टी के मान की गणना करने पर टी का मान 10.68 प्राप्त हुआ है, जो स्वतंत्रता के अंश 798 पर टी मान 0.05/0.01 स्तर पर 1.96/2.56 से अधिक है। अतः विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर क्षेत्र भिन्नता का सार्थक अन्तर होता है। इस आधार पर परिकल्पना उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है, अस्वीकृत की जाती है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 08 Aug- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान को प्रर्दशित करने का तुलनात्मक आरेख

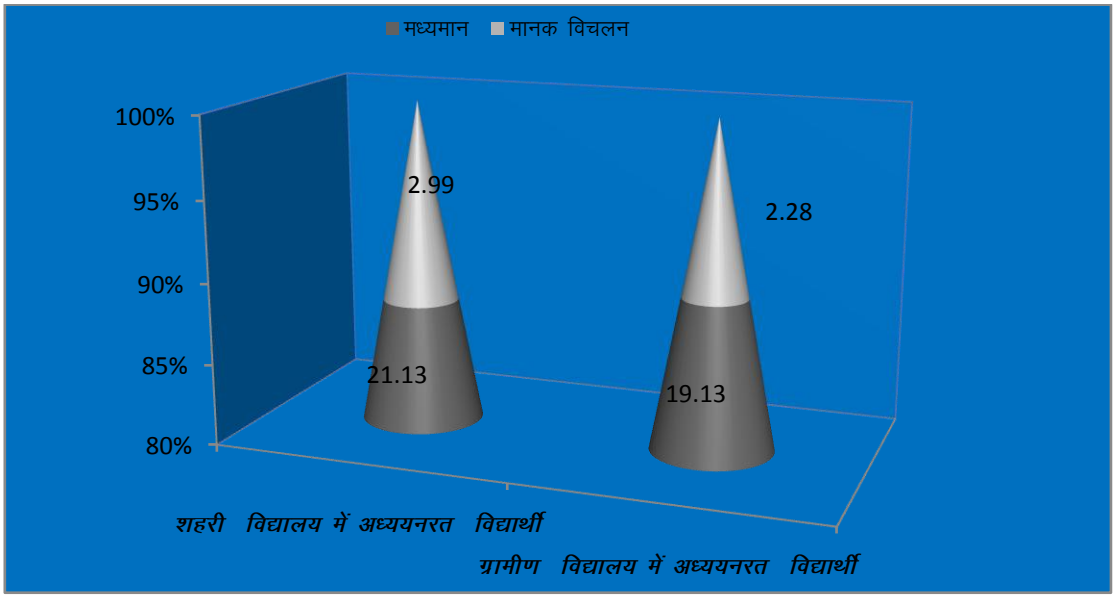

2. उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन

सारणी

क्र. सं.	समूह	N.	सह संबंध	गुणांक
1.	**संवेगात्मक बुद्धि**	400	0.198	0.01 स्तर पर सार्थक
2.	**शैक्षिक उपलब्धि**	400		

स्वतंत्रता के अंश 798 हेतु आवश्यक 'टी' का तालिका मान

0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान .081

0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान .062

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 08 Aug- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आरेख

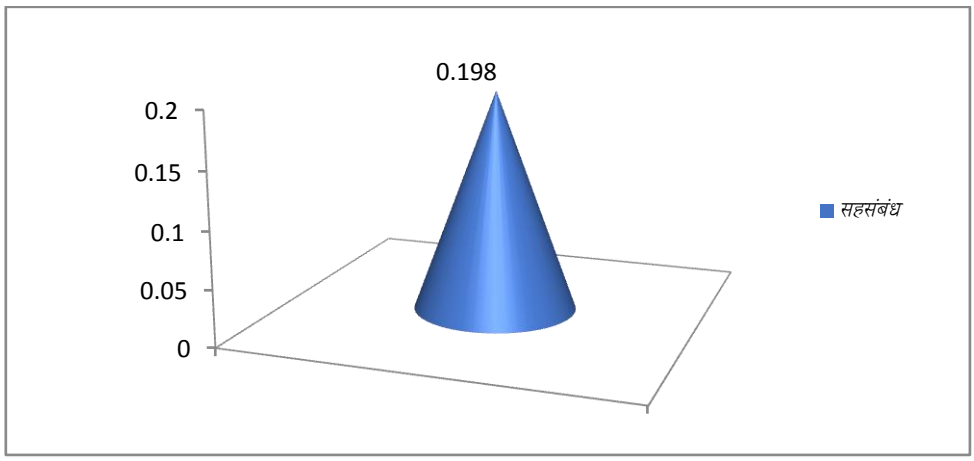

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सहसंबंध का मान 0.198 प्राप्त हुआ है जो विश्वास स्तर 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। यह सह–संबंध धनात्मक उच्च कोटि का है। अतः उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सह–संबंध धनात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया है।

शोध निष्कर्ष :–

1. अतः विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर क्षेत्र भिन्नता का सार्थक अन्तर होता है।

2. विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर क्षेत्र भिन्नता का सार्थक अन्तर होता है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर पाया जाता है।

3.शैक्षिक उपलब्धि व संवेगात्मक बुद्धिके मध्य सहसंबंध का मान 0.198 प्राप्त हुआ है जो विश्वास स्तर 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। यह सह–संबंध धनात्मक उच्च कोटि का है। अतः उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धिके मध्य सहसंबंध धनात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया है।

शैक्षिक निहितार्थ :–

1. किशोरावस्था में बालक इतना अधिक समझदार हो जाता है कि वह अपनी कमियों को पहचान लेता है। वह अपनी योग्यता, क्षमता और वस्तु स्थिति का ज्ञान करायेगा कि उसकी संवेगिक बुद्धि किस प्रकार उसकी बुद्धिलब्धि की पहचान कर उसकी अनुसार व्यवहार करने की योग्यता को प्रभावित करती है। इस ज्ञान से वह स्वयं ऐसे साधन अपनाएगा जो उसकी प्रगति के मार्ग में आने वाली रुकावटों बाधाओं को दूर कर सके। शिक्षक द्वारा बताए गए उन्नयन के उपायों का गहनता से अध्ययन करके शैक्षिक स्तर एवं क्षमताओं को बढा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 08 Aug- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सकेगा, अपने संवेगों पर नियंत्रण कर उनका प्रबधन कर दूसरों से सद्व्यवहार करना सीख सकेगा और इस प्रकार से वह मानसिक रुप से संतुष्ट होगा, हीन भावनाओं से दूर रहेगा एवं विघटनकारी एवं विध्वंसक भावनाओं पर अंकुश रखकर समाज में सम्मान युक्त स्थान प्राप्त कर सकेगा।

2. शोध अध्ययन के निष्कर्षो के आधार पर माता–पिता को न केवल स्वस्थ, शांतिपूर्ण व समूह वातावरण ही प्रदान करना चाहिए अपितु समय–समय पर वे बालक–बालिकाओं को पुरुस्कार, प्रेम व प्रोत्साहन भी प्रदान करना चाहिए जिससे बालक में अपने कार्यो को करने में तत्परता व रुचि जागृत हो सकेगी साथ ही संवेगात्मकता के गुण का समुचित विकास हो सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.Ciccarelli, S.E.andMeyer, G.E. (2006).Psychology. Prentice HallHigher Education.

2. D. Sluyter (Eds.) Emotional development and enmotional intelligence:Implica

tions foreducators, 3-31,New York :Basic Books.

3. Goleman, D. (1995). Emotional intelligernce-Why It Can Matter More Than IQ ? New York:Bantam Books.

4. Hyde, Pethe and Dhar (2021). Emotional IntelligenceScale.Agra:National Psycho logical Corporation.

5. Kaur, S. (2016). Sevenfold Emotional Intelligence Scale. Agra: H. P. Bhargava Book House.

6. Mayer, J.D., andSalovey,P. (1993). The intelligenceof emotional intelligence.Intellgence, 17(4), 433-442.

7. Mayer, J. D.and Salovey,P. (1995). Emotional intelligenceandthe construction and regulation of feelings.Applied & Preventive Psychology, 4(3), 197-208.

8. Mayer, J.D., andSalovey,P. (1997). What is emotional intelligence? InP.Salovey &